"रमेश उपाध्याय की कहानियों में यथार्थबोध"

दयालबाग़, एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा, की पी–एच.डी. (हिन्दी) की
उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध विषय की प्रस्तावित
रूपरेखा

2019

निर्देशक | **शोधार्थी**

डॉ. सुमन शर्मा
अस‍िस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय

वीनेश कुमारी

विभागाध्यक्ष

प्रो० शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग
कला संकाय

कला संकाय प्रमुख

प्रो० जे.के. वर्मा

हिन्दी विभाग कला संकाय
दयालबाग़, एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा–282005

“रमेश उपाध्याय की कहानियों में यथार्थबोध”

शोध परिचय–

कथा कहने–सुनने की परम्परा तो आदिम समय से ही प्रचलन में रही है जो आज भी समस्त रुप से प्रचलित है। हिन्दी कहानी आज सुव्यवस्थित रुप से विकसित होती हुई एक लम्बा दौर तय कर चुकी है और साहित्य में अपनी विशेष पहचान के साथ निखर रही है। जो आज कहने सुनने की परिसीमाओं से बाहर निकलकर लिखित दस्तावेज बन गई है। प्रत्येक साहित्यकार समाज की विविध त्रासद घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए समाज को एक नई दिशा प्रदान कर पाठक के लिए ऐसी भाव–भूमि का निर्माण करता है जिससे वह सही मूल्य निर्णय करने में अपनी समर्थशीलता का परिचय देता हुआ उचित न्याय और बेहतर समाज निर्माण में सही मूल्यों की तलाश कर सके। वैसे ही रमेश उपाध्याय भी समकालीन साहित्य परम्परा में जनवादी लेखन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

यथार्थ का आशय वास्तविकता से है। किसी वस्तु को उसके वास्तविक रुप में वर्णित किये जाने से है। बोध का अभिप्राय ज्ञान, चेतना और बुद्धि से है। हिन्दी साहित्य में यथार्थवादी लेखकों की बडी लम्बी कतार है यथार्थवादी दर्शन का प्रभाव 5 वी शताब्दी में यूनान के ऊपर पड़ चुका था परन्तु भारत में इससे पूर्व ही यथार्थवादी दर्शन को चार्वाक दर्शन के रुप में देखा जा सकता है। इस प्रकार चार्वाक दर्शन पूर्णतः प्रत्यक्ष यथार्थ पर विश्वास रखता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत में यूनान से पहले ही यथार्थवादी दर्शन का प्रभाव था। पूर्णतः कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में आदिकाल से ही यथार्थवादी लेखन होता रहा है जिसने जो प्रत्यक्ष अनुभव किया उसे वैसा ही रुप देकर साहित्य में संप्रेषित करने का कार्य किया। रमेश उपाध्याय अपने समय के यथार्थ और जीवन का चित्रण अपने साहित्य में करते हैं वे अपने साहित्य के अन्तर्गत समाज के मूल्यों का चित्रण करते हैं। साहित्य में किये गये यथार्थ चेतना चित्रण से ही मूल्यों का बोध होता है। यथार्थ चेतना से मतलब वास्तविक सत्य के प्रति सचेत रहने से है मनुष्य जो कुछ अपने आस–पास देखता है अपनी इन्द्रियों से अनुभव करता है वही यथार्थ है। यथार्थ के बारे में आपसी

मंतव्य देना या तर्क वितर्क करना ही यथार्थवाद कहलाता है। यथार्थवाद अंग्रेजी शब्द रियलिज्म (realism) का हिन्दी अनुवाद है।

रमेश उपाध्याय की कहानियों में यथार्थबोध का आशय उनके साहित्य में यथार्थ को आंकने तथा उनके साहित्य में मानवीय मूल्यों की तलाश तथा यथार्थ को खोजने से है। रमेश उपाध्याय का कहानी साहित्य यथार्थ चित्रित है वे अपनी कहानियों में अपने समय के यथार्थ को प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा उभारने में सक्षम हैं। रमेश उपाध्याय की कहानियाँ भारतीय संस्कृति और जीवन को आधार बनाकर लिखी गई हैं। इनमें सामंती जीवन, पूँजीवादी और मजदूर वर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। रमेश उपाध्याय के साहित्य में स्पष्टता जैसा गुण है उनकी प्रत्येक रचना इस गुण से अछूती नहीं है। उनकी कहानियाँ समाज के हर वर्ग पहलू के यथार्थ से रूबरू कराती हुई चलती हैं।

रमेश उपाध्याय का जीवन परिचय–

कहानी लेखन की परम्परा में रमेश उपाध्याय प्रबुद्ध कहानी साहित्यकार के रुप में विशिष्ट पहचान स्थापित कर चुके हैं। रमेश उपाध्याय का जन्म 1 मार्च सन् 1942 में कासगंज शहर के नजदीक एक गाँव बढ़ारी बैस एटा जिला, उत्तर प्रदेश के ब्राह्मण परिवार में हुआ। रमेश उपाध्याय का कथा साहित्य इस प्रकार है–इनके कहानी संग्रहों में जमी हुई झील (1969), शेष इतिहास (1973), नदी के साथ(1976), चातुर्दिक (1980), बदलाव से पहले (1981), पैदल अँधेरे में (1981), राष्ट्रीय राजमार्ग (1984), किसी देश के किसी शहर में (1987, नवीन संस्करण–2015), कहा हो प्यारे लाल! (1991), चर्चित कहानियाँ (1995), अर्थतंत्र तथा अन्य कहानियाँ (1996), दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2003), डॉक्यूड्रामा तथा अन्य कहानियाँ (2006), एक घर की डायरी (2009), साथ चलता शहर (2012), त्रासदी...माई फुट! (2017), पुराने जूतों की जोड़ी (2015), कहीं जमीन नहीं (2016), पानी की लकीर (2018) आदि। उपन्यास– चक्रबद्ध (1967), दंडद्वीप (1970, नवीन संस्करण– 2009), स्वप्नजीवी (1971), हरे फूल की खुशबू (1991), आदि हैं। नाटक साहित्य में– सफाई चालू है (1974), पेपरवेट (1981), बच्चों की अदालत (1981), भारत–भाग्य विधाता (1990), हाथी डोले

गाम–गाम (2009) आदि। **केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा** द्वारा हिन्दी पत्रकारिता, रचनात्मक लेखन के लिए–**गणेश शंकर विद्यार्थी** पुरस्कार से सम्मानित, **उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ** द्वारा–**'नदी के साथ'** और **हिन्दी अकादमी दिल्ली** द्वारा–**'किसी देश के किसी शहर में'** तथा **'डॉक्यूड्रामा तथा अन्य कहानियाँ'** के लिए ख्याति लब्ध है। त्रैमासिक पत्रिका **'कथन'** के संपादन में बनमाली साहित्यिक पत्रिका सम्मान से सम्मानित, हिन्दी अकादमी दिल्ली के द्वारा 2016–17 के **'गद्य विधा'** सम्मान से सम्मानित किये जा चुका हैं।

रमेश उपाध्याय और यथार्थबोध

रमेश उपाध्याय की कहानियों में सामाजिक यथार्थ चित्रित हुआ है। उनके हर कहानी संग्रह में समाज के हर वर्ग और पहलू का यथार्थ परक चित्रण किया गया हैं। धर्म, वर्ग, और आर्थिक समस्या, राजनीतिक भावना, राष्ट्रीय भावना, जातीय भेद–भाव और अन्य समस्याओं के प्रति ध्यान आकर्षित किया है। यही उनकी कहानियों का यथार्थ है। उनकी कहानियों में समाज और जिन्दगी के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से उभारा है। गाँव और अपने समाज के विभिन्न रीति–रिवाजों, सामयिक मुद्दों, रुढ़ियों, स्त्री समस्याओं का बहुत ही प्रभावकारी ढंग से रमेश उपाध्याय ने अपनी लेखनी को मूर्त किया है। भारतीय संस्कृति के विभिन्न चेहरों को रमेश उपाध्याय की कहानियों में पढ़ा जा सकता है। रमेश उपाध्याय की अनेक कहानियाँ सामाजिक एवं सांस्कृतिक यथार्थ के भिन्न–भिन्न आयामों को अनुभवों के स्तर पर उभारने में सक्षम है। रमेश उपाध्याय की कहानियाँ यथार्थ की अभिव्यक्ति हैं। कहानियों की पृष्ठभूमि अपने समय के यथार्थ को आधार बनाकर लिखी गई है। कहानियों के पात्र अपने समाज के संघर्ष से जूझते हुए दिखाई देते हैं वह थक कर हार जाने वाले पात्र नहीं हैं। एक नई सकारात्मक सोच को जन्म देते हुए अन्याय एवं शोषण के विरूद्ध खड़े होकर लड़ने वाले संघर्षशील पात्र हैं जो व्यवस्थागत विरोध की कहानी कहते हैं।

रमेश उपाध्याय की कहानियाँ स्त्री जीवन की विसंगति, मजदूर वर्ग के संघर्ष, अर्थ व्यवस्था की पकड़ से आपसी सम्बन्धों के बिखर जाने, प्रेम विवाह में आने वाली तमाम समस्यायें, विवाह उपरान्त जीवन में सामंजस्य की कमी से टूटते रिश्ते, परिवार, आधुनिक जीवन शैली से अस्तित्व खोती मानवता एवं मूल्यों में

विखराव, अर्द्ध सामंती व्यवस्था का शिकार बनते जीवन के शोषण, अन्याय आदि के यथार्थ को सामने लाने का प्रयास करती है तथा अकस्मात दुर्घटनाओं के शिकार होने की कहानी को अभिव्यक्त करती है। **'अर्थतंत्र'** कहानी आज के वातावरण की सच्चाई को व्यक्त करती है। वहाँ संस्कारों की अवहेलना और अर्थ की अहमियत में परिवारिक रिश्तों में एक लम्बी दूरी पैदा होने के यथार्थ को अभिव्यक्त करती है। **'त्रासदी...माई फुट!'** भोपाल गैस कांड में होने वाली दुर्घटना– तबाही से विनाश के मंजर तथा देश की सरकार और कारखानों की असहनीय लापरवाही को उजागर करते हुए सरकारी व्यवस्था के खिलाफ तथा उसके द्वारा समय पर न उठाये जाने वाले ठोस कदमों और असावधानियों के यथार्थ को उजागर करती है। साथ ही भारत की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य पर सवाल उठाती है और वर्तमान यथार्थ की कहानी में कम्पनियों के प्राइवेट हो जाने पर कर्मचारियों की दुर्गति एवं उनके साथ होने वाले अनाचार एवं अश्लील व्यवहार के यथार्थ को अभिव्यक्त करती है।

शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन–

हम जिस माहौल में जीते हैं वैसा ही अक्स हमें साहित्य में नजर आता है वैसे ही रमेश उपाध्याय ने अपने कहानी साहित्य में समाज के अनेक संदर्भो के यथार्थ को वर्णित किया है। हिन्दी साहित्य लेखन में लगातार अपना वजूद बनाये रखने वाले रमेश उपाध्याय ऐसे विरले लेखकों में से एक हैं जो कहानी लेखन के साथ–साथ अपने प्रबुद्ध लेखन के लिए जाने–जाते हैं। जिनकी अनगिनत साहित्यिक रचनाओं की देन को आँक पाना शोध करते हुए भी कुछ असंभव सा ही है। ऐसे प्रबुद्ध प्रखर चेतनाशील साहित्यकार पर कार्य करने की प्रेरणा मुझे मेरी शोध निर्देशिका एवं उच्चतर शोधार्थियों के सराहनीय सहयोग से प्राप्त हुई इस विषय पर शोध कार्य करने की एक नयी उर्जा मुझे स्वयं रमेश उपाध्याय के मार्ग निर्देशन के अतुल्यनीय सहयोग से प्राप्त हुई।

प्रस्तुत शोध से पूर्व हुए शोध कार्यों का विवरण–

प्रस्तावित रुपरेखा अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया जायेगा कि रमेश उपाध्याय की साहित्य को क्या देन है। मेरे द्वारा शोध कार्य हेतु अध्ययन सामग्री जुटाते वक्त कहानी संग्रह की मात्रा अधिक रही है जबकि अन्य विधाओं पर कम ही लिखा गया है जिसके कारण शोध की परिसीमाओं के केन्द्र में रमेश उपाध्याय के कहानी संग्रहों का चयन किया गया है। इन्हीं कहानी संग्रहों के आधार पर शोध कार्य का ताना–बाना बुना गया है। इनके रचनात्मक साहित्य का पर्याप्त साहित्य शोध की दृष्टि से अध्ययन करते हुऐ, पूर्व में हुए शोध के संकेत इस प्रकार मिलते हैं–

1. रमेश उपाध्याय का कथा साहित्यः संवेदना और शिल्प, शोधकर्ता :अंजली कायस्था, स्थान–हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला, 2002।।

2. रमेश उपाध्याय की कहानियों में युगबोध, शोधकर्ता : सीमा रानी, स्थान–हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, 2011।।

3. रमेश उपाध्याय का कहानी साहित्य : जनवादी विचारधारा और सामाजिक सरोकार, शोधकर्ता : गोविंदराम शर्मा, स्थान–मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर,2010।।

प्रस्तुत शोध **'रमेश उपाध्याय की कहानियों में यथार्थबोध'** विषय का चयन इसलिए किया है क्योंकि रमेश उपाध्याय पर इस विषय की दृष्टि से अभी तक पूर्व में कोई शोध कार्य नहीं हुआ है।

शोध प्रबंध का उद्देश्य एवं महत्व–

रमेश उपाध्याय की कहानियों में वर्णित यथार्थबोध को शोध का मध्य बिन्दु बनाया है प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत रमेश उपाध्याय की कहानियों में वर्णित यथार्थ के स्वरुपों का विवेचन करते हुए रमेश उपाध्याय की कहानियों में वर्णित वर्तमान व्यवस्था के यथार्थ और वर्तमान जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन के यथार्थ के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हुए वर्तमान समाज की सामाजिक,

आर्थिक, राजनीतिक, स्थितियों का अध्ययन, साथ ही रमेश उपाध्याय की कहानियों में प्रयुक्त कथ्य और शिल्प की विशेषता पर प्रकाश डालते हुए समकालीन हिन्दी कहानी में रमेश उपाध्याय के स्थान को भी उजागर किया जायेगा। एक बेहतर समाज के निर्माण में रमेश उपाध्याय के योगदान को रेखांकित करते हुए समाज को एक नयी विचारधारा प्रदान करना प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य होगा।

प्रस्तावित शोध की परिकल्पना –

1. साहित्यकार रमेश उपाध्याय की कहानियों में यथार्थबोध की खोज करना ।
2. यथार्थबोध के माध्यम से वर्तमान एंव भविष्य की समस्याओं के यथार्थ को उजागर करना।
3. बढ़ती आधुनिकता की चकाचौंध में मानवीय मूल्यों का ह्रास को उजागर करना।
4. साहित्यकार की आन्तरिक भावनाओं एवं मर्म को विश्लेषित करना।
5. साहित्यकार के साहित्य में निहित बेहतर समाज के उद्देश्यों का विश्लेषण।

प्रस्तावित शोध कार्य में प्रयुक्त प्रविधि–

प्रस्तावित शोध कार्य 'रमेश उपाध्याय की कहानियों में यथार्थबोध' विषय को यथार्थ के गहन अध्ययन मनन के साथ प्रस्तुत किया जायेगा साथ ही प्रस्तुत शोध कार्य हेतु वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग किया जायेगा।

शोध कार्य की मौलिकता–

मेरे द्वारा किया गया शोध वर्तमान एवं भविष्य दोनों में उपयोगी, मौलिक एवं नवीन होगा ऐसा मेरा प्रयास रहेगा तथा साहित्य के क्षेत्र में उनके अवदानों का उचित मूल्याकंन हो, शोध और समीक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध संतुलित दृष्टि का प्रतिपादक सिद्ध हो। शोध द्वारा साहित्य और समाज को एक नवीन विचारधारा देने का एक क्षुद्र प्रयास रहेगा।

रमेश उपाध्याय की कहानियों में यथार्थबोध

प्रस्तावित रुपरेखा

प्रथम अध्याय : –हिन्दी कहानी : स्वरुप एवं परम्परा

(क)–समकालीन हिन्दी कहानी

(ख)–रमेश उपाध्याय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्यायः –यथार्थवाद एंव यथार्थबोध : एक विवेचन

(क) –यथार्थवाद : अवधारणा और स्वरुप

(ख) –यथार्थबोध : अवधारणा और स्वरुप

तृतीय अध्यायः –रमेश उपाध्याय की कहानियों में यथार्थबोध

(क)–रमेश उपाध्याय की कहानियों में सामाजिक यथार्थबोध

(ख)–रमेश उपाध्याय की कहानियों में राजनीतिक यथार्थबोध

(ग)–रमेश उपाध्याय की कहानियों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक यथार्थबोध

(घ)–रमेश उपाध्याय की कहानियों में आर्थिक यथार्थबोध

चतुर्थ अध्यायः–समकालीन हिन्दी कहानी में रमेश उपाध्याय का स्थान

(क)–प्रमुख समकालीन हिन्दी कथाकार

(ख)–समकालीन हिन्दी कथाकार और रमेश उपाध्याय

पंचम अध्याय :–रमेश उपाध्याय की कहानियाँः कथ्य और शिल्प

(क)–रमेश उपाध्याय की कहानियों की भाषा

(ख)–शब्दस्तरीय विश्लेषण

(ग)–शैलीगत विश्लेषण

उपसंहार

परिशिष्ट –

1. आधार ग्रन्थ सूची
2. संदर्भ ग्रन्थ सूची
3. शब्दकोश
4. विभिन्न पत्र–पत्रिकाएं
5. वेबसाइट्स

आधार ग्रन्थ

क्रं.सं.	**पुस्तक का नाम**	**लेखक**	**प्रकाशक**	**वर्ष**
1	अर्थतन्त्र तथा अन्य कहानियाँ	रमेश उपाध्याय,	प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली	1996
2	एक घर की डायरी	रमेश उपाध्याय	शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली	2009
3	कहीं जमीन नहीं	रमेश उपाध्याय	शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली	2016
4	कहाँ हो प्यारेलाल!	रमेश उपाध्याय	सचिन प्रकाशन, दिल्ली	1991
5	किसी देश के किसी शहर में	रमेश उपाध्याय	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1987
6	चतुर्दिक	रमेश उपाध्याय	पंकज प्रकाशन, दिल्ली	1980
7	चर्चित कहानियाँ	रमेश उपाध्याय	सामयिक प्रकाशन, दिल्ली	1995
8	जमी हुई झील	रमेश उपाध्याय	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	1969
9	डॉक्यूड्रामा तथा अन्य कहानियाँ	रमेश उपाध्याय	शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली	2006
10	दस प्रतिनिधि कहानियाँ	रमेश उपाध्याय	शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली	2003
11	नदी के साथ	रमेश उपाध्याय	सामयिक प्रकाशन,दिल्ली	1976
12	पुराने जूतों की जोड़ी	रमेश उपाध्याय	शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली	2015
13	पानी की लकीर	रमेश उपाध्याय	शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली	2018
14	पैदल अंधेरे में	रमेश उपाध्याय	सामयिक प्रकाशन, दिल्ली	1981
15	राष्ट्रीय राजमार्ग	रमेश उपाध्याय	सामयिक प्रकाशन, दिल्ली	1984
16	बदलाव से पहले	रमेश उपाध्याय	धरती प्रकाशन, बीकानेर	1981
17	शेष इतिहास	रमेश उपाध्याय	शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली	1973

सहायक ग्रन्थ

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक	वर्ष
1	आठवे दशक की हिन्दी कहानियों में जनवादी चेतना	डॉ. ओमप्रकाश पाल	दर्पण प्रकाशन	2006
2	काम संबंधों का यथार्थ और समकालीन हिन्दी कहानी	वीरेन्द्र सक्सेना	साहित्य भारती, दिल्ली	1975
3	कहानी का समकालीन	गुरचरण सिंह	संजय प्रकाशन, दिल्ली	2018
4	चिंतन सृजन का सामाजिक सौन्दर्यबोध	राजकुमार शर्मा	उद्भावना प्रकाशन, गाजियाबाद	2014
5	नयी कहानी की रचना प्रक्रिया	डॉ. सुमन मक्कड़	श्याम प्रकाशन, जयपुर	2009
6	प्राइवेट पब्लिक और भूमंडलीय यथार्थवाद	संज्ञा उपाध्याय	शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली	2010
7	भारत में सुकरात	शिवरत्न थानवी	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	2016
8	यथार्थवाद	शिवकुमार मिश्र	द मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली	1975
`9	राजेन्द्र यादव का कथा साहित्य यथार्थवादी परिप्रेक्ष्य	डॉ. हरिशंकर गौड	लोकालोक प्रकाशन, गाजियाबाद	1999
10	रामदरश मिश्र की कहानियों में यथार्थ–चेतना और मूल्य–बोध	डॉ. राधेश्याम सी. सारस्वत	डॉ. राधेश्याम सी. सारस्वत, गुजरात	2004

11	साहित्य के बुनियादी सरोकार	कर्णसिंह चौहान	पीपुल्स लिटरेसी, दिल्ली	1982
12	हिन्दी कहानी में नये आन्दोलन की जरूरत,	रमेश उपाध्याय	शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली	2012
13	त्रासदी...माई फुट!	रमेश उपाध्याय	शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली	2013

कोश ग्रन्थ–

हिन्दी साहित्य कोश भाग–1, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, 1985।

नालंदा विशाल शब्दसागर, नवल जी, आदिश बुक डिपो दिल्ली, 1988।

राजपाल हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली, 2016।

पत्र पत्रिकाएं–

संबोधन, नंद भारद्वाज, कांकरोली राजस्थान, अप्रैल–जून, 2009।

प्रेरणा, लीलाधर मंडलोई, भोपाल, जनवरी, 2014।

कथन, रमेश उपाध्याय, (स॰), दिल्ली, शब्दसंधान प्रकाशन, 2010।